अनुसन्धान प्रवाह Anusandhan Pravah
(An Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary, Bilingual, E-Journal)
ISSN: 3108-1541
Vol.2, Issue 1, Year 2025, pp 90-96
URL : https://journal.sskhannagirlsdc.ac.in/
सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय
स्वर्ण जयन्ती वर्ष
2024-2025

प्रयागराज की हस्तशिल्प परम्परा - मुंज घास से बने उत्पाद

"तीर्थराज प्रयाग की अमूल्य विरासत- दशहरा, कुम्भ और मुंज शिल्प के सन्दर्भ में"

अर्जुन सिंह *, डॉ. वंदना गुप्ता **, प्रोफसर मीनू अग्रवाल* एवं डॉ रश्मि सिंह******

*शोध सहायिका, आई.सी.एस.एस.आर.प्रोजेक्ट, एस.एस.के.जी.डी.सी., प्रयागराज

** शोध सहायक, आई.सी.एस.एस.आर.प्रोजेक्ट, एस.एस.के.जी.डी.सी., प्रयागराज

*** प्रोफसर & शोध परामर्श, आई.सी.एस.एस.आर.प्रोजेक्ट, एस.एस.के.जी.डी.सी., प्रयागराज

**** असिस्टेंट प्रोफसर & शोध परामर्श, आई.सी.एस.एस.आर.प्रोजेक्ट, एस.एस.के.जी.डी.सी., प्रयागरा

शोधसार:

प्रयागराज की त्रिवेणी माघमास में पावन स्नान, कुम्भ मेले, धार्मिक तीर्थाटन, सिद्धक्षेत्रों, मंदिरों, दशहरा के दस दिवसीय उत्सव में निकलने वाली श्रृंगार चौकी, भोर चौकी, रामदल एवं रामलीला के लिए तो जानी ही जाती है लेकिन कला, शिल्प, लघु उद्योग आदि की दृष्टि से नदियों के किनारे स्वतः उद्भूत होने वाली घास - मुंज- से दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं के हाथ से बुनाई द्वारा निर्माण की परम्परा और विरासत भी विद्यमान है। इस कम ज्ञात विरासत को उजागर करने के क्रम में प्रस्तुत आलेख में प्रयागराज के मुंज घास से उपयोगी उत्पाद को बनाने की प्रक्रिया, मुंजशिल्प और भौगोलिक संकेतक, ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के बढ़ते अवसर, महिला सशक्तिकरण, सरकार की योजनाएं, मुंज उत्पाद की मांग, उत्पादों को बेचने का बाजार, वोकल मार्केट में बेहतर पहुँच, आधारभूत संरचना

Article Publication:

Published online on: 30/12/2025

Corresponding Author:

अर्जुन सिंह

शोध सहायक, आई.सी.एस.एस.आर.प्रोजेक्ट,
सदनलाल सांवलदास खन्ना महिला महाविद्यालय,
प्रयागराज

Email arjunsinghparihar3@gmail.com

©S.S. Khanna Girls Degree College

Scan For Paper

का विकास आदि दृष्टियों से संक्षेप में प्रकाश डाला गया है।

शोध उद्देश्य

शोध आलेख का उद्देश्य आधुनिक समाजशास्त्रीय, नीतिगत समकालीनता में लोक कला मुंज शिल्प की वस्तुस्थिति का सामान्य रेखांकन है। बहुत कम लोग जानते है कि प्रयागराज की धरती पर मुंजघास से टोकरी, डलिया, तथा अन्य सजावटी और घरेलू उपयोग के सामान भी बनतें हैं और इन शिल्प कारों की पीढी दर पीढी हस्तांतरित होती इस शिल्पकला ने अब एक पारम्परिक विरासत का रूप ले लिया है। प्रयागराज के महेवा बस्ती की मुंजशिल्पकला पर सामान्य परिचय प्रस्तुत है ताकि वर्तमान पीढी इस से परिचित हो सके।

मुख्य शब्द: *मुंज, भौगोलिक संकेतक, महिला सशक्तिकरण, एक जिला एक उत्पाद योजना, वोकल फ़ॉर लोकल, स्किल इंडिया*

प्रस्तावना

प्रयागराज की धरती पर मुंज घास से टोकरी, डलिया, तथा अन्य सजावटी और घरेलू उपयोग के सामान भी बनतें है और इन शिल्पकारों की पीढी दर पीढी हस्तांतरित होती इस शिल्प कला ने अब एक पारम्परिक विरासत का रूप ले लिया है। प्रयागराज के महेवा बस्ती की मुंज शिल्प कला पर सामान्य परिचय प्रस्तुत है ताकि वर्तमान पीढी इससे परिचित हो सके। यह लघु आलेख भारतीय सामाजिक अनुसंधान परिषद द्वारा अनुदानित प्रोजेक्ट "तीर्थराज प्रयाग की अमूल्य विरासत- दशहरा, कुम्भ और मुंज शिल्प के सन्दर्भ में" के अन्तर्गत प्रोफसर मीनू अग्रवाल एवं डॉ रश्मि सिंह के शोध परामर्श में शोध सहायकों द्वारा तैयार किया गया है।

प्रयागराज का मुंज हस्तशिल्प

प्रयागराज का मुंज शिल्प एक प्राचीन और पारंपरिक कला है जो कई पीढियों से निरंतर चली आ रही है| सदियों से गंगा जमुना एवं सरस्वती संगम स्थल प्रयागराज सांस्कृतिक एवं शिल्प परंपराओं का केंद्र रहा है| यह शिल्प एक विशेष प्रकार की घास मुंज और कासा जैसी प्राकृतिक सामग्रियों पर आधारित है| इनसे डलिया, टोकरिया, चटाइयां एवं अन्य उपयोगी वस्तुएं बनाई जाती हैं| लिखित इतिहास ना होने पर भी मुंजशिल्प कई दशकों से प्रयागराज की विरासत बना हुआ है। यहां के कारीगर मुंज से सुंदर मजबूत एवं टिकाऊ शिल्प तैयार करते हैं। कुंभ के समय मुंज

से बने उत्पादों की मांग सदैव रही है| यहां के कारीगर अपनी कई पीढ़ी से यह कार्य निरंतर करते चले आ रहे हैं| जिससे इसकी सत्यता एवं निरंतरता पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित हो रही है| यह शिल्प केवल आजीविका का साधन ही नहीं अपितु धार्मिक अनुष्ठानों, विवाह संस्कारों और सामाजिक व्यवहार में गहराई से जुड़ा हुआ है| यह शिल्प मुख्यत: महिलाओं द्वारा किया जाता है, जो निम्न एवं मध्य वर्ग के लोगों के लिए रोजगार का साधन है| कासा एवं मुंज का उल्लेख ऋग्वेद में पवित्र घास के रूप में भी उल्लेखनीय रूप से मिलता है, जिसका उपयोग धार्मिक अनुष्ठानों के प्रदर्शन के दौरान बैठने के लिए किया जाता था| मुंज उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले के नैनी महेवा क्षेत्र में टोकरी बनाने के लिए बड़े पैमाने पर उपयोग किया जाता है। नदी के किनारे, छोटे किसानों के क्षेत्र तक सीमित, टोकरी बुनाई के लिए इस मोटे तने वाली घास का उपयोग एक कार्यात्मक और व्यावहारिक आवश्यकता के रूप में समझा जा सकता है। मुंज बुनाई से जुड़े अधिकांश कारीगर छोटे किसान है, जो गंगा जमुना दोआब के करीब बसे हैं। कारीगरों द्वारा हस्तशिल्प उत्पाद के रूप में इन्हें बनाया जाने लगा है कारीगरों ने इस कार्य को करने के लिए इसलिए चुना क्योंकि उन्हें घर के पास मुंज घास की उपलब्धता आसानी से मिली। एवं उसके रेशों के टिकाऊ होने के कारण निर्मित उत्पाद टिकाउ एवं सौन्दर्यपरक बने। वर्तमान में उत्तर प्रदेश के एक जिला एक उत्पाद विभाग द्वारा मुंज शिल्प को चुना गया है यह शिल्प कला पिछले कई दशकों से प्रचलित है मुंज शिल्प एक पारंपरिक हस्तशिल्प है। मुंज (एक प्रकार की जंगली घास) से घरेलू एवं सजावटी उत्पाद बनाए जा रहे हैं। मुंज उत्पाद टोकरी, डलियाँ, पेपर वेट, पर्स, लैम्प, चपाती बॉक्स, फ्रूट बास्केट, ब्रेड बास्केट, वॉल हैंगिंग, टि कोस्टर, टेबल मैट ,सुहाग पिटारा आदि लोकप्रिय हैं।

उत्पाद को बनाने की प्रक्रिया

मुंज शिल्प में प्रयुक्त तकनीक रुक-रुक कर गांठे लगाने के कुंडलित करने की है| आवश्यकता एवं उपयोग अनुसार टोकरियों के माप एवं आकार में भिन्नताएं रहती हैं| मुंज से बने उत्पादों को बनाने के लिए मुंज हस्तशिल्पकर्मी सबसे पहले नहर या नदी के किनारे से हरी मुंज (जो कि अक्टूबर से नवंबर तक मिलती है) को काटकर लाते हैं, उनकी छटाई करके उनकी सभी परतो को अलग-अलग रखकर सुखाते हैं जरूरत के उत्पाद के अनुसार मुंज की रंगाई की जाती है, जिससे रंगीन और आकर्षक उत्पाद बनाए जा सके। रंगीन मुंज की सहायता से घरेलू एवं सजावटी उत्पाद का निर्माण किया जाता है। मुंज घास से निर्मित डलिया, सूप, चटाइयां और घरेलू

सामग्रियां ग्रामीण जीवन का अभिन्न हिस्सा रही है| विवाह के दौरान वर वधु के सामान रखने हेतु मुंज की टोकरियों का प्रयोग आज भी होता है| यह शिल्पदान पात्र, प्रसाद पूजा थाली और अनुष्ठान में प्रयुक्त सामग्री के रूप में महत्वपूर्ण रहा है|

मुंज शिल्प और भौगोलिक संकेतक (G.I Tag)

प्रयागराज के मुंज शिल्प को वर्ष 30 मार्च 2024 को भौगोलिक संकेतक (G.I Tag) जारी किया गया था। यह पर्यावरण के अनुकूल है, भौगोलिक संकेतक मिलने से इस शिल्प को वौश्विक स्तर पर पहचान मिली एवं उत्पादों के निर्यात के अवसर बढ़े जिससे हस्तशिल्पियों को आर्थिक सहायता प्राप्त होगा । (दी टाइम्स ऑफ़ इंडिया, 18 जुलाई 2024)

ग्रामीण क्षेत्र में रोजगार के बढ़ते अवसर

मुंज शिल्प से युवाओं में नए रोजगार सृजन हो रहे हैं जिससे जो व्यक्ति मुंज को नदी या नहर से काट कर लाते हैं उसे बेचते हैं। जो मुंज उत्पाद बनाते हैं उसे खरीदते हैं, और अन्य लोगों की मदद से इसके उत्पादों का निर्माण करते हैं, इन उत्पादों को अन्य लोग बाजार ले जाकर बेचते हैं। इस शिल्प में तीन प्रकार के रोजगार सृजन होते हैं जिसमें प्रयागराज जिले में लगभग सात सौ से अधिक व्यक्ति मुंज शिल्प कार्य में लगे है।

महिला सशक्तिकरण

स्त्रियां इस हस्तशिल्प की मुख्य वाहक है, उनकी पहचान घरेलू कारीगर तक ही सीमित है| कुशल कलाकारों को हस्तशिल्पकार की संज्ञा दी गई है|

जिला उद्योग एवं उद्यमिता विभाग की ओर से एक जिला एक उत्पाद योजना के तहत मुंज शिल्प में जुड़े लोगों में सबसे अधिक महिलाएं कार्य करती है। विभाग द्वारा दस दिवसीय प्रशिक्षण दिया जाता है जिसमें वर्ष भर में लगभग पांच सौ से अधिक शिल्पकर्मियों को प्रशिक्षित किया जाता है। इसके बाद उन्हें टूल किट (जिसकी मदद से मुंज उत्पाद बनाए जाते हैं) एवं पांच सौ रुपये प्रतिदिन मानदेय भी दिया जाता है। नैनी के महेवा गांव की कुछ महिलाएं जो इस शिल्प में सक्रिय हैं, वह इस क्षेत्र में महिलाओं को रोजगार प्रदान करती है। वर्तमान में यहां पर सात सौ से अधिक लोग मुंज शिल्प का कार्य कर रहे हैं।

सरकार की योजनाएं

एक जिला एक उत्पाद योजना के तहत उत्तर प्रदेश सरकार एवं भारत सरकार स्वरोजगार एवं कुटीर उद्योग के लिए कई ऋण योजना की सुविधा दी है। प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना, महिला उद्यमी योजना, जिसमें पचास हजार से लेकर एक करोड रुपए तक के ऋण की सुविधा है। जिसमें लोगों को सब्सिडी की सुविधा दी है जिससे युवाओं में आत्मनिर्भर एवं स्वरोजगार सृजित करें।

मुंज उत्पाद की मांग

मुंज से बने उत्पादन की मांग देश के सभी शहरों प्रयागराज, बनारस, लखनऊ, कानपुर आदि प्रमुख स्थानों से उनके पास ऑर्डर आते हैं साथ ही अन्य प्रदेशों में भी इनकी माँग है। देश के अलावा अन्य यूरोपीय देशों में अमेरिका आदि विदेशों से आने वाले मेहमानों को मुंज से बने उत्पादों को भेंट स्वरूप दिए जाते हैं।

उत्पादों को बेचने का बाजार

मुंज से बने उत्पादों को लोग बनाने वाले से थोक के भाव खरीद कर अन्य जगहों में ले जाकर बेचते हैं। इसके अलावा ऑनलाइन बाजार जैसे फ्लिपकार्ट और अमेजॉन आदि में मुंज से बने उत्पाद की बिक्री होती है तथा उन्हें बहुत पसंद किया जा रहा है।

वोकल फ़ॉर लोकल और आत्मनिर्भर भारत: यह योजना लोगों को लोकल सामान इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं, जिससे मुंज से बने उत्पाद की घरेलू मांग बढ़ गयी है। ODOP योजना कारीगरों को अपना सामान बेचने के लिए एक संरचित मंच प्रदान करती है, जो मुंज से बने उत्पादों को 'लोकल से ग्लोबल' बनने के सफ़र में मदद करती है।

स्किल इंडिया: एक जिला एक उत्पाद विभाग (ODOP) के द्वारा आयोजित प्रोग्राम में स्किल डेवलपमेंट की पहल शामिल है, जिससे लोकल कारीगरों के हुनर को बढ़ावा मिलता है, जिनमें से कई महेवा जैसे गांवों की महिलाएं हैं, जिन्होंने इस शिल्प को अपने बुजुर्गो से सीखा है और अपने आने वाली पीढ़ी को भी सीखा रही है मुंज से बने उत्पादों की गुणवत्ता में सुधर हुआ है और मुंज घास से बने उत्पादों की कई किस्म की वस्तुए बनायीं जाती है, जिससे इस शिल्प कला से जुड़े हुए लोग आर्थिक रूप से मजबूत हुए है।

मेक इन इंडिया: घरेलू उत्पादों और जंगली घास के इस्तेमाल को बढ़ावा देकर, ये पहल आयातित एवं महंगे सामान पर निर्भरता कम करती हैं, और लोकल सप्लाई चेन को मज़बूत करती हैं। यह क्राफ्ट इको-फ्रेंडली है जिसमे लोकल

पर उपलब्ध कच्चे माल का इस्तेमाल होता है, जो इसे ज़मीनी स्तर पर "मेक इन इंडिया" सिद्धांत का एक सस्टेनेबल उदाहरण बनाता है।

मार्केट में बेहतर पहुँच: मुंज क्राफ्ट को जियोग्राफ़िकल इंडिकेशन (GI) टैग मिलने से राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय निर्यात के नए रास्ते खुले हैं, जिससे मुंज से बने उत्पादों को बेहतर बाजारी पहचान और मूल्य मिली है। कारीगरों को ऋण (सब्सिडी के साथ) लेने में भी मदद मिलती है और सरकार द्वारा उन्हें ग्राहकों से सीधे बातचीत करने के लिए प्रदर्शनी और क्राफ्ट मेलों में हिस्सा लेने के लिए बढ़ावा दिया जाता है।

आधारभूत संरचना का विकास : कारीगरों को एक ऐसा मंच मिलता है जो उन्हें प्रत्येक स्थिति और पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए महेवा (प्रयागराज) में मुंज क्राफ्ट विलेज है, जिससे यह शिल्प अर्थव्यवस्था की मुख्यधारा में जुड़ जाएगा। इन आपस में जुड़ी पहलों से, प्रयागराज में मुंज शिल्प उद्योग को मदद मिलती है, जिससे कारीगरों को मज़बूती मिलती है और पारंपरिक शिल्प को बचाया जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

- *Prayagraj | Official Website of One District One Product Uttar Pradesh*. https://odopup.in/en/article/district-profile-allahabad.
- "मुंज की रस्सी और खिलौने बनाकर आत्मनिर्भर बन रही महिलाएं". 10 सितम्बर 2021, जागरण, https://www.jagran.com/uttar-pradesh/raebareli-rope-of-moonj-and-by-making-toys-wemen-becoming-dependant-22009622.html
- "With GI Tag, Sangam City's Moonj Products to Go Places." *The Times of India*, 18 July 2024. *The Economic Times - The Times of India*, https://timesofindia.indiatimes.com/city/allahabad/sangam-citys-moonj-craft-receives-gi-tag-for-export-opportunities/articleshow/111821188.cms.
- "युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए दिया जाएगा प्रशिक्षण". 24 June 2025, हिंदुस्तान, https://www.livehindustan.com/uttar-pradesh/prayagraj/story-uttar-pradesh-government-launches-free-skill-development-training-program-for-youth-empowerment-201750773214563.html?fbclid=IwZXh0bgNhZW0CMTEAAR

7aAiXkqvV-7HabAlHq8PwNOL7lejJVXxrBgDefhbFmzuKrt7Gek2tgQl2e2Q_aem_19q5hzO_xAhXsmwCACv2jg

- ऋग्वेद (1.191.3), डोनिगर,डब्लू.(अनुवादक)2005,

Photo Courtesy : www.dsource.in, www.uptourismpage.in

आभार - प्रस्तुत आलेख भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद)Indian Council of Social Science Research) प्रयोजित रिसर्च प्रोग्राम के अंतर्गत स्वीकृत एवं अनुदानित प्रोजेक्ट **"तीर्थराज प्रयाग की अमूल्य विरासत दशहरा :, कुम्भ एवं मुंज शिल्प के सन्दर्भ में "** के अंतर्गत तैयार किया गया है। हम उनके प्रति आभार ज्ञापन करते है।